



परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षा का विषय	विषय कोड	परीक्षा का माध्यम
हिन्दी	001	हिन्दी

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्य प्रदेश, भोपाल  
 BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

उत्तराधिकारिका का सरल क्रमांक 319-  
 2138951

अंकों में परीक्षार्थी का रोल नम्बर  
 1 3 2 7 6 8 3

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्य प्रदेश, भोपाल  
 BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे

गैर दिशे वायु बदलरण अनुसार रोल नम्बर भरी।  
 उदाहरणार्थ

1	1	2	4	3	9	5	6	8
एक	एक	दो	चार	तीन	नौ	पांच	छः	आठ

क :- पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंकों में 50 शब्दों में 7

ख :- परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक 14

ग :- परीक्षा का दिनांक 02 03 2019

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा  
 हायर सेकण्डरी परीक्षा वर्ष-2019  
 केन्द्र क्रमांक-131012

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर : केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर

*K. S. ...* *...*

केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक द्वारा भरा जावे

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तानुसार सही पाई होले क्राप्ट स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया तथा अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अंकों का योग सही है।  
 निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाए।  
 उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा : परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा

*SUNITA TIWARI*  
 V.A.  
 शा. उच्च शिक्षा कार्यालय  
 V.N.2308

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

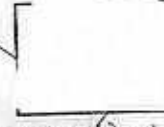
केवल परीक्षक द्वारा भरा जाये।  
 प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तियों की प्रविष्टी करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्त	में
1		✓	✓
2		✓	✓
3		✓	✓
4		✓	✓
5		✓	✓
6		✓	✓
7		✓	✓
8		✓	✓
9		✓	✓
10		✓	✓
11		✓	✓
12		✓	✓
13		✓	✓
14		✓	✓
15		✓	✓
16		✓	✓
17		✓	✓
18		✓	✓
19		✓	✓
20		✓	✓
21		✓	✓
22		✓	✓
23		✓	✓
24		✓	✓
25		✓	✓
26		✓	✓
27		✓	✓
28		✓	✓

2



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 2 के अंक

कुल



प्रश्न क्र.

प्रश्न-क्रमांक - 1

सही विकल्प :- रिक्त स्थान :- उत्तर :-

(i) रेवती ।

(ii) बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ।

(iii) गानपन ।

(iv) प्रगतिवाद ।

(v) ध्यान न देना ।

प्रश्न-क्रमांक - 2

सही विकल्प :- उत्तर :-

(i) उत्तर :- (स) जयकुमार जलज ।

(ii) उत्तर :- (अ) कैंट के मुँह में लीस तेर हवें वर्ष में ।

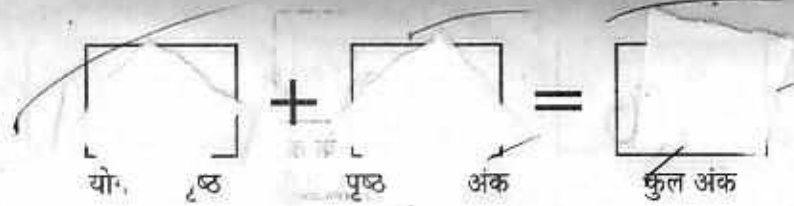
(iii) उत्तर :- (स) चिरगाँव ।

(iv) उत्तर :- (क) कमल ।

(v) उत्तर :- (अ) कैंट के मुँह में लीस ।

BSB

3



प्रश्न क्र.

प्रश्न-क्रमांक - 3

सत्य / असत्य :-

- (i) उत्तर :- सत्य ✓
- (ii) उत्तर :- सत्य ✓
- (iii) उत्तर :- सत्य ✓
- (iv) उत्तर :- सत्य ✓
- (v) उत्तर :- असत्य ✓

B  
S  
E

प्रश्न-क्रमांक - 4

सही जोड़ी :-

उत्तर -

क्र.	अ.	क्र.	ब.
(i)	मंगल वर्षा		भारती सुसाद मिश्र
(ii)	अध्यक्ष महोदय		संयुक्त विधा
(iii)	मेरे जीवन के कुछ चित्र		डॉ० रामकुमार वर्मा
(iv)	लक्ष्यार्थ		मुहावरा
(v)	रस के अंग		चार



4

$$\boxed{\phantom{000}} + \boxed{\phantom{000}} = \boxed{\phantom{000}}$$

पृष्ठ 4 का अंक



प्रश्न क्र.

प्रश्न - क्रमांक - 5

एक शब्द या वाक्य में :-

i) उत्तर :- निमाड़ी और कुन्वैली ।

ii) उत्तर :- यह देह नश्वर है ।

iii) उत्तर :- व्यतिरेक अलंकार ।

iv) उत्तर :- आचार्य विनोबा भावे ।

v) उत्तर :- 50 हजारों ।

प्रश्न - क्रमांक - 6 (अथवा)

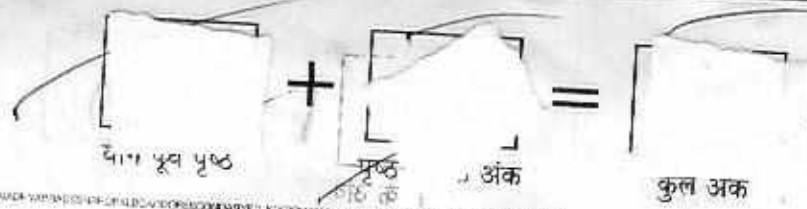
उत्तर :- सभी देश हमारे यहाँ शिक्षा प्राप्त करने के प्रयोजन से आते रहे हैं ।

Laser/Inkjet

प्रश्न - क्रमांक - 7

उत्तर - कबीर ने साधु पुरुष की संगति करने को कहा है। क्योंकि पुरुषों की संगति से सन्मार्ग पर चलने लगते हैं।

5



प्रश्न क्र. जिससे लौक परलौक सुधारते हैं

प्रश्न-क्रमांक - 8

उत्तर: - धरती 'मानव' है तो 'वसंत' मानवता यही नाता दोनों का है।

Copier Label A4

प्रश्न-क्रमांक - 9

उत्तर: - केवट की जीविका का आधार एकमात्र उसकी नाव थी। वह नाव में सवारियाँ बैठा गंगा पार कराता है।

7-16 99.1x33.9

प्रश्न-क्रमांक - 10 (अथवा)

उत्तर: - घातक अपनी बौली के द्वारा विरही लक्ष्य को दूरक या-चौट पहुँचा रहा है। इसलिए कवि ने उसे घातक कहकर सम्बोधित किया है।

प्रश्न-क्रमांक - 11

उत्तर: - गौतम तपस्या करने घर की छोड़कर तथा सन्यासी बनकर वन चले गए थे।

mmx16

6

$$\boxed{\phantom{00}} + \boxed{\phantom{00}} = \boxed{\phantom{00}}$$

ख पृष्ठ
पृष्ठ 6 के अंक
कुल अंक



प्रश्न क्र.

प्रश्न-क्रमांक - 12

उत्तर:- झाड़ का अभिषेक करने के पूर्व सुरेश शर्मा ने उसे एक लात मारकर चकनाचूर कर दिया था।

प्रश्न-क्रमांक - 13 (अथवा)

B  
S

उत्तर:- गाँव की संध्या में पूजाभाव दृष्टियों की टनटनाहट तथा ब्राह्मण धड़ियालों की स्वर लहरी में प्रकट होता है।

प्रश्न-क्रमांक - 14 (अथवा)

उत्तर:- एक समय था जब हमारा देश विश्व गुरु कुहलाता था। लेकिन पश्चिमी सभ्यता के अध्यापकों ने हमें अपनी सभ्यता को झूलाने पर मजबूर कर दिया था। और हम उसी में डूलते चले गए और अपनी संस्कृति को झूलते गए तो इसी को स्वीकार लेते-लेते आधुनिक अंधकार उठा है कि पश्चिमी सभ्यता को अपना और भारतीय सभ्यता को झूलना यही 'आधुनिक अंधकार' है।



7

$$\boxed{\text{यो}} + \boxed{\text{पृष्ठ 7 के अंक}} = \boxed{\phantom{\text{यो पृष्ठ 7 के अंक}}}$$



प्रश्न क्र.

प्रश्न - क्रमांक - 15 (अथवा)

उत्तर - कुलैजा जलना :- ( दूसरों की बढ़ती हुई प्रगति से दुरिक्त होना )

वाक्य में प्रयोग :- मोहन अपने पड़ोसी की बढ़ती हुई प्रगति को देखकर उसका कुलैजा जलता है ।

अँगूठा दिखाना :- ( मना कर देना )

वाक्य में प्रयोग :- शमेश को उसके दोस्त ने पहले विश्वास दिया कि मैं तेरी सहायता करूँगा पर वस्तु आने पर उसने अँगूठा दिखाना दिया ।

प्रश्न - क्रमांक - 16

उत्तर - विभावना अलंकार :- जहाँ कारण के अभाव में कार्य का पूर्ण होना बताया जाए वहाँ विभावना अलंकार होता है ।

उदाहरण :- बिनु पद चलें सुने बिनु काना, कर बिनु करम करें विधि नाना,  
मानन सहित सकल सब आगे, बिनु पाणी पस्ता बड़ जोगी ॥

8

+

=



20

पृष्ठ 8 के अंक

3

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक - 17 (अथवा)

उत्तर: गौरा ने लेखिका के यहाँ माने से लेखिका के घर में माने दुग्ध महोत्सव ही गया है। गौरा सुबह तथा शाम का मिलाकर कुल बारह सेर दुग्ध देती थी। और उसके बड़े लालमणि के लिए कुल सेर अधिक दुग्ध दीजें देने पर श्री इतना अधिक बच जाता था कि वहें ने भास-पास के पशु-पक्षियों से ईलेकर सभी पालित कुत्ते-बिल्लियों को भी प्रचुर मात्रा दुग्ध उपलब्ध हो गया था। अतः माने दुग्धो नहामी का आशीर्वाद फलित हो गया है।

B  
S  
E

प्रश्न क्रमांक - 18

उत्तर:- क्र	भाषा	क्र	विभाषा
(1)	भाषा में प्रचुर साहित्य पाया जाता है।	(1)	जसमें कम साहित्य पाया जाता है।
	भाषा के क्षेत्र यह व्यापक क्षेत्र में प्रचलित होती है।	(2)	यह राज्य विशेष बंध ही सीमित होती है।
(3)	भाषा बोली का पूर्ण विकसित रूप है।	(3)	विभाषा बोली का अर्धविकसित रूप है।



9

योग पूर्व पृष्ठ

+

पृष्ठ 9 के अंक

=

कुल अंक



प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक - 19 (अथवा)

उत्तर - जुंजार रस का व्याधी भावः - रति (प्रेम) ।

उदाहरणः - " राम को कष निहारति जानकी, कुंगन के नग की परदाही  
यतिं सर्वे सुधि भूली गयी, कर टेकिरही पल टारति नाहीग

प्रश्न क्रमांक - 20

SE उत्तर - द्विवेदी युग की चार विशेषताएँ निम्न हैं ।

- 1) विषय - वस्तु को व्यवस्थित ढंग से उभावी शैली में प्रस्तुत करने पर बल दिया गया है ।
- 2) भाषा को परिमार्जित एवं परिष्कृत किया है ।
- 3) राष्ट्रीयता, नैतिकता, समाज सुधार जैसे विषयों पर लिखा गया ।
- 4) उस युग हास्य - व्यंग्य शैली को भी अपनाया गया है ।

10

$$\boxed{\text{यों}} + \boxed{\text{पृष्ठ 10 के अंक}} = \boxed{\text{कुल अंक}}$$



प्रश्न क्र.

प्रश्न-क्रमांक- 21

उत्तर-

प्रगतिवादी कवि :- (1) जिवमंगल सिंह 'लुमन' ।  
 (2) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' ।

रचनाएँ :-

(1) जिवमंगल सिंह 'लुमन' - दिल्लील, जीवन के गान ।  
 (2) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' - 'अकर्मिका', परिमल, गीतिका ।

B  
C  
E

विश्लेषण :- (1) प्रगतिवाद का लक्ष्य में कठिनादी विचारधारामों का जमकर विरोध किया गया है ।

सांख्यवाद से प्रभावित ।  
 इब्रि के प्रति आस्था का भाव ।

प्रश्न-क्रमांक- 22

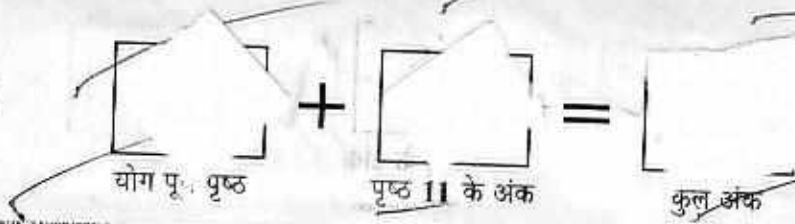
उत्तर-

शरद जोशी (लेखक परिचय)

(i) दो रचनाएँ :- (1) मछी का हाथी जीप पर सवार डीलियाँ ।  
 (2) एक आगधा ।

(ii) भाषा-शैली :- शरद जोशी जी की भाषा अत्यन्त सरल व सहज है । भाषा में उवाह हैं और जगह-जगह हास परिहासों का हल्का स्पर्श आपने अपनी रचना को

11



प्रश्न क्र.

और अधिक रोचक बनाया है। आपकी शैली मुख्य रूप से हास्य व्यंग्य प्रधान शैली है। और उसके अन्तर्विरोधों का आधा-आधा मानकर अनेक व्यंग्य किए हैं। तथा आप प्रमुख रूप व्यंग्यकार के लेखन शैली हैं। तथा शैली में आलोचनात्मक शैली का भी प्रयोग किया है। तथा व्यास शैली का भी प्रयोग किया है।

(iii)

साहित्य में स्थान :- जगद जी जी एक प्रसिद्ध व्यंग्य लेखन के रूप में हिन्दी साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। इन व्यंग्यों के कारण आप व्यंग्यकार के रूप में प्रसिद्ध हैं।

E  
S  
E

प्रश्न-क्रमांक - 23

उत्तर -

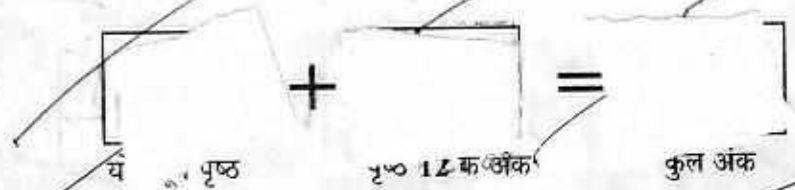
॥ अथर्वकर प्रसाद (कवि परिचय)

(i) दो रचनाएँ :- (1) लहर ।  
(2) कामायनी ।

(ii) भाव-पक्ष :- प्रसाद जी ने भारतीय शरीर के गौरवपूर्ण रूप को अपने साहित्य में उभारा है। उनका साहित्य शक्ति मीन का साहित्य है। उसमें प्रेम और करुणा की स्निग्ध आभा है। उसमें उत्साह और उर्मि का आलोक है। तथा प्राकृतिक दृश्यों में आपका अतुलनीय वर्णन किया गया है। पक्ष-द्वंद्वों व प्रतीकों को अपनाया गया है।



12



प्रश्न क्र.

(ii)

उत्तर-पक्ष :- प्रसाद जी की भाषा अत्यन्त सरल, सहज एवं प्रवाह है। अपने काव्यों में उन्होंने उपर्युक्त शैली का प्रयोग किया है। तथा मनमोहक शैली को भी अपनाया है। उनके भाषा में बस, छंद, उपमा, रूपक, उपमेषा, विरोधाभास तथा सँदेह अलंकारों का भरपूर प्रयोग किया है। तथा आपका प्राकृतिक नवीनता में अतुलनीय स्थान है। तथा मानवीकरण अलंकार की भी दृष्टा अपने काव्यों में प्रदर्शित की है।

B  
S

(iii)

साहित्य में स्थान :- प्रसाद जी का हिन्दी साहित्य में 'नाटक' के रूप में प्रसिद्ध है। तथा आप दायवारी युग के आघात स्तम्भों में आपका विशिष्ट स्थान है। तथा नाटक के अलावा आप विविध प्रकार के लेखों में भी अपना स्थान परवर्तते हैं। आपकी हिन्दी साहित्य की अनूठी देन युग-युग तक अमर रहेगी।

प्रश्न-क्रमांक-24	(अथवा)
-------------------	--------

उत्तर -

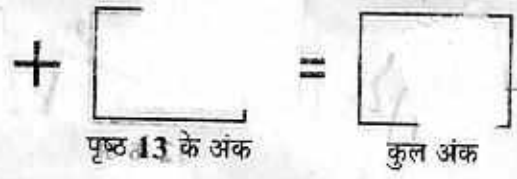
संकेत -

यह संसार क्षणभंगुर

साथिकता है

(i)

सन्दर्भ :- प्रस्तुत गद्यंश हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्वर्णि' के 'रवेण' नामक पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक आधुनिक युग के प्रेमचन्द प्रसिद्ध कथानीकार रजेंद्र कुमार हैं।



प्रश्न क्र.

② प्रसंग :- लेखक संसार में किसी वस्तु के नष्ट होने या उसकी क्षणभंगुरता के महत्व का वर्णन कर रहा है।

③ व्याख्या :- लेखक कहता है कि यह संसार क्षणभंगुर है। नष्ट होने वाला है। इसमें सुख और दुःख की <sup>बराबरी</sup> ~~स्था~~ <sup>बराबरी</sup> है। यह जो धिसने बनाया है। वह उसी में लय हो जाता है। या विलीन अर्थात् इसमें मेरा-तेरा की भावना नहीं है। यह तो भगवान की देन है। संसार में समय के साथ सभी चीजें नष्ट होती हैं। अतः संसार क्षणभंगुर तो ही है। लेखक बालिका के द्वारा माझ बनाया गया लेकिन जब उसको एक ही लात में तोड़ देता है। तो बालिका हठ करती है। रोती है, बिलखती है। सी मूर्ख तेरा इसमें <sup>स्था</sup> ~~स्था~~ <sup>स्था</sup> है। बौक और दुःख की <sup>स्था</sup> ~~स्था~~ <sup>स्था</sup> बात है। यह तो संसार और मनुष्य रूपी जीवन इसमें पानी के बुलबुले के समान है। पानी का बुलबुदा एक पल बनकर फिट नष्ट हो जाता है। वह पानी से बनता है। उसी में विलीन हो जाता है। अर्थात् यह जीवन भी पानी के बुलबुले के ही समान ही है। इसलिए इसकी सार्थकता फूटने में है। तू चित्ता मत मर मूर्ख बालिका ही गया तो ही पाने दो उसकी सार्थकता इसी में थी।

विशेष :-

- (1) माया शब्द साहित्यक खड़ी बोली है।
- (2) संसार में क्षणभंगुरता के महत्व को बताया गया है।
- (3) यह एक प्रसिद्ध कहानी है। भाषा सरल एवं सहज है।
- (4) बालिका को समझाने का वर्णन किया जा रहा है।
- (5) चिदरं व व्यास गौरी है।

B  
S  
E

14

$$\boxed{\quad} + \boxed{\quad} = \quad$$

24 पृष्ठ                      पृष्ठ 14 के अंक                      कुल अंक



प्रश्न क्र.

प्रश्न - क्रमांक - 25	(अथवा)
-----------------------	--------

उत्तर - संकेत :- मैया कब है मुँह लौटी

(1) सन्दर्भ:- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्वाति' के 'वाल्सल्य' और 'स्नेह' के शीर्षक सूत्र के बालकृष्ण नामक पाठ से अवतरित है। इसमें कुवि वालसल्य रस के सम्राट 'सूरदास जी' हैं।

B  
S  
E

(2) प्रसंग:- प्रस्तुत पंक्तियों में बालकृष्ण के मनोहारी ढंग का चित्रण किया गया है।

(3) व्याख्या:- कृष्ण माँ यशोदा से कहते हैं कि मैया हो, मैया मेरी चोटी कब बढ़ेगी। और तू मुझे कितनी बार दूध पिलाती है। फिर भी यह होती है। जैसे बलराम जी की चोटी तो लम्बी है। और कितनी लम्बी और मोटी है। तू तो मोह कितना दूध पिलाती है। और माँ यशोदा कृष्ण को मनाने और दूध पिलाने के लिए कहती है कि गाय का दूध पीने से चोटी बढ़ती है और माँ यशोदा उनकी चोटी को संजानी और संवारती है। नहलाती धुलाके, बालों को बनाती है। नागिन की तरह तो रस होकर घटती पर लौट जाते हैं। इसी पंक्ति के माध्यम से सूरदास जी कृष्ण के लोकरंजक का मनोहारी चित्रण किया है।





प्रश्न क्र.

(4)

काव्यसौन्दर्य :-

- (1) ब्रजभाषा का प्रयोग किया है।  
 (2) तत्सम प्रधान शब्दों का प्रयोग किया गया।  
 (3) वाक्सल्य रस की दृष्टि दर्शनीय है।  
 (4) कृष्ण का बाल मनोहारी चित्रण किया गया है।  
 (5) अनुप्रास अलंकार है।

प्रश्न-क्रमांक-26
-------------------

संकेत - वैदिक काल से

देती है।

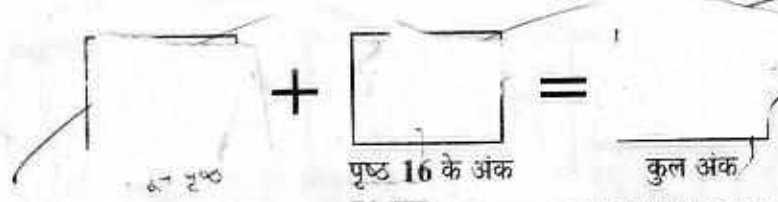
“हिमालय के सौन्दर्य की महत्ता” शीर्षक -

(i) वैदिक काल से ही हिमालय को बहुत पवित्र पहाड़ माना जाता है।

(ii) हिमालय के पहाड़ों का अति सुन्दर सौन्दर्य देखकर मन आनंद और कृतज्ञ हो जाता है। ऐसा लगता है कि यह सृष्टि रचने की देन है सारी सृष्टि की सम्भाव जाग्रत होता है।

(iii) यहाँ बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, यमनोत्री जैसे पवित्र तीर्थ हैं।

(iv) कृतज्ञता में उल्लेख - “ता” वैदिक में - इक ।



प्रश्न क्र.

अरन - क्रमांक - २८ (अथवा)

पत्र

उत्तर -

सैकामें,

नगरपालिका अध्यक्ष महोदय,  
लहार नगर मि०३ महोदय

B  
S  
E

विषय:- नगरपालिका अध्यक्ष डाँ कालौनी की साफ-सफाई की  
ओरें ध्यान देने के लिए निवेदन पत्र ।

महोदय, मैं नवविकसित कालौनी लहार की निवासी हूँ। वार्ड  
क्रमांक-५ से हूँ। अतः मोहल्ले में साफ-सफाई नहीं होती है।  
सड़कों पर नियमित पानी बहता रहता है। मालियों में  
मच्छर पनप रहे हैं। इनकी साफाई नहीं होती है। अतः  
ये गंदगी अत्यन्त हानिकारक सिद्ध हो रही है। जिससे  
अनेक बीमारियाँ फैल रही हैं। मलेरिया, हैजा, डेंगू जैसी  
अपेक्षक बीमारियाँ उत्पन्न हो रही हैं। जिससे मानव जीवन  
अस्वस्थ-व्यस्त हो गया है। संकट में है। और मैंने इससे  
पहले पर सफाई की ओर ध्यान देते हुए नगरपालिका को सूचना  
दी थी लेकिन इस कोई कार्यवाही नहीं की है।

अतः आपसे जस निवेदन है। आप मोहल्ले की व्याप्त  
गंदगी को दूर करने के लिए नगरपालिका कर्मचारियों को  
अवगत कराए ता आपकी अति कृपा होगी।

धन्यवाद।

दिनांक - ०२/०३/१९

प्राची  
नाम - प्रतीलाक्षमि एवं  
समस्त कालौनीवासी

17

$$\boxed{\text{योग पूर्व पृष्ठ}} + \boxed{\text{पृष्ठ 17 के अंक}} = \boxed{\text{कुल अंक}}$$



प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक - 28 (म) (निबंध)

उत्तर

(iii) नारी हैंती कुल हैं

“ नारी तुम केवल श्रृंहा ही विश्वास रजत पग-पग तल में पीयूष स्त्रोत सी बहा करी, जीवन के सुन्दर समतल में।”

रूपरेखा:-

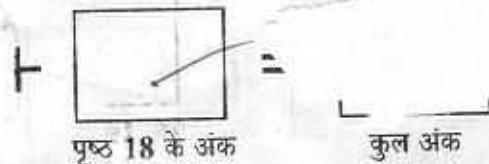
- (1) प्रस्तावना
- (2) वैदिक काल में नारी
- (3) पुरातन काल में नारी
- (4) भारतीय समाज में नारी का स्थान
- (5) आधुनिक नारी
- (6) महयुगीन नारी
- (7) अस्तिकाल में नारी
- (8) नारी के विकास में ही नारी का जोर है
- (9) चिन्ता का विषय
- (10) उपसंहार

ए कोटि क्षीप जलते थे मन में, कितने तरत तपते यौवन में, एस बरसाने वाले आकर, विष होइ गए वन में।

प्रस्तावना:- नारी सृष्टि का आधार हैं। नर और नारी सृष्टि की पूर्णता के दौलत हैं। नारी के बिना सृष्टि अधूरी है। सृष्टि के आदिकाल से नारी की महत्ता को अक्षुण्ण बताया गया है। समाज की रचना में नारी के अनेक रूप हैं। माँ, प्येली, बहन आदि सभी रूपों में वह मान्य हैं। वह स्वम परिस्थितियों में देवी हैं तो विषम परिस्थितियों में माँ भवानी हैं। अतः संसार की रचना में नारी को सम्मान ही दृष्टि से देखा गया है।

B  
S  
E





पृष्ठ 18 के अंक

कुल अंक



प्रश्न क्र.

मनु स्मृति के अन्तर्गत उदाहरण है।

“यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता।”

वैदिक काल में नारी :- वैदिक काल में नारी को पूर्ण स्वतंत्रता के उल्लेख प्राप्त हैं। तथा वैदिक काल में नारियों को अधिक सम्मान की दृष्टि से देखा गया। वैदिक काल में नारी की शिक्षा-दीक्षा की उचित व्यवस्था थी। तथा वैदिक काल में नारी ने अनेक उद्योगों की रचना की उसने पदों का अध्ययन किया पत्नी मंत्रों का निर्माण कर उनका अध्ययन किया। वैदिक काल में नारी सुसंस्कृत, सश्रम, और सुशिक्षित थी अतः उसी से वैदिक काल में नारी को सम्मान के पद प्राप्त सर्वोपरि माना गया है।

B  
S  
E

भारतीय समाज में नारी का स्थान :- भारतीय समाज में नारी का

स्थान महत्त्वपूर्ण है नर भगवत् आधीवक्ता प्राप्त करते परिश्रम करता है तो परिवार के कलित्व को बनाए रखने में नारी ही पूर्ण भूमिका निभाती है। नारी के अनेक रूप हैं पर हर रूप सुख देने वाली है। अतएव किसी धार्मिक कार्य में नारी को ही प्राथमिकता दी जाती है। नारी दुर्गा बनकर जासित का भण्डार है। सरस्वती बनकर विद्या देने वाली है। लक्ष्मी बनकर सुख समृद्धि देने वाली है। माँ बनकर पुत्र के लक्षण को सृष्टी है। पत्नी बनकर पति को आत्म विश्वास देती है। बहन बनकर भाई को रक्षा का पूज्य बंधुवती है। इस प्रकार भारतीय समाज में नारी को सम्मान को अधिक सम्मानीय ठहरा गया है।



प्रश्न क्र.

पुरातन काल में नारी :- वैदिक काल में नारी को सम्मान की दृष्टि से देखा गया था लेकिन पुरातन काल में भी नारी ने अपनी भूमिका बनाई है। वह ऊँची से ऊँची मिलकर कार्य करती हैं। इस युग की नारियों ने ऋग्वेद के गान्यों की रचना की तथा इस युग महान शक्ति, कुन्ती, गांधारी, रोमपा, लोष्मुदा आदि नारियाँ हुई तथा उन्होंने अपने पति, पुत्र, भूमि में भी दिखाया रत्नी लम्बीबाई तथा दुर्गावती इसके प्रबल उदाहरण हैं।

B  
S  
E

आधुनिक युग में नारी :- आधुनिक युग में नारी को अधिक सम्मान की दृष्टि से देखा गया आधुनिक में आते-आते नारी की छाया हो गई। आधुनिक युग में नारी को राजा राममोहनराय तथा दयानन्द सरस्वती ने नारी की महत्ता को प्रसूषण बताया है तथा उन्हें सम्मान दिया है।

भक्तिकाल में नारी :- भक्ति काल में नारी की स्थिति इतनी दयनीय बन गई उसकी संवेदना के बारे में बहुत कम किसी ही शब्द तक नहीं कुहे, खुर, तुलसी उसे अपव किष्की नागिन कहा है। तथा उसे दैव, गौर शूद्र पशु नारी के समान वाड़ना का अधिकारी बताया है।

11 दोल गौर शूद्र पशु नारी, यह सब हैं वाड़न अधिकारी



याग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 10 क अंक

कुल अंक

प्रश्न क्र.

नारी के विकास में नारी का गौरव :- नारी के विकास में ही नारी का गौरव सन्निहित है।

प. जवाहर लाल नेहरू, शास्त्री, मंगल सिंह जैसे महान विभूतियों को जन्म नारी ने ही दिया तथा नारी ही क्रूरक से विभूतियाँ पैदा हुईं तथा नारी ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

B  
S  
E

चिन्ता का विषय :- भाष्य का युग नारी के लिए चिन्ता का विषय बन गया है। नारी को विप्लासिता भोगनी पड़ रही है, वह असम्भ, निरक्षर है। इसलिए सभी आवश्यकताओं के लिए वह पुरुष पर आश्रित होती चली जा रही। समाज में नारी के लिए बेटी के जन्म की अपेक्षा बेटे के जन्म को अधिक महत्व दिया जा रहा है।

उपसंहार - नारी का आरतीय समाज में महत्वपूर्ण स्थान है। वह सभी रूपों में पूजनीय है। तथा वैदिक काल की तरह इसी लेकिन सभी कालों में तो नहीं लेकिन आधुनिक संस्कृति में आरतीय समाज में नारी के स्थान महत्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। यहाँ उसके रूप माँ, जेयसी, लक्ष्मी, मादि पत्नी मनेउ उसने सभी रूप पूजनीय है, वह रचना की दृष्टि से सृष्टि का आधार है। नारी सृष्टि से मानव विकास की संस्था की राह का मार्ग खुलता जा रहा है।

ए मुक्ति करी नारी को मानव, फिर बन्दिनी नारीको, युग-युग की निर्मम कारासे, जननी सरकी प्यारी करे।





प्रश्न क्र.

प्रश्न-कुमाँठ - 28 (ब)

(iii) जल संरक्षण

स्वफेरना -

र जल ही जीवन है जैसे व बीदा म ऊरे ।

- (1) पुस्तावना
- (2) जल की उपयोगिता
- (3) जल संरक्षण की आवश्यकता
- (4) जल प्राप्ति के स्रोत
- (5) जल संरक्षण करने के साधन
- (6) जल संकट
- (7) जल संकट से हानि
- (8) उपसंहार